2026 Volume: 02 Issue: 08 www.ijrpa.com ISSN 2456-9995 Research Article

International Journal Research Publication Analysis

Page: 01-10

शिक्षा की सामाजिक व्यवस्था में दुर्खीम, मार्क्स एवं पार्सन्स के समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

***[1]शोधार्थी सत्य नरायन यादव एवं [2]प्रोफ़ेसर पी. एस. त्यागी शिक्षा विभाग**

*1&2 दयालबाग एजुकेशनल इंस्टिट्यूट, दयालबाग आगरा, भारत 282005.

Article Received: 10 July 2026
Article Revised: 30 July 2026
Published on: 18 August 2026

***Corresponding Author: सत्य नरायन यादव**

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टिट्यूट, दयालबाग आगरा, भारत 282005.

DOI: https://doi-doi.org/101555/ijrpa.3240

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र "शिक्षा की सामाजिक व्यवस्था: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण" का मुख्य उद्देश्य शिक्षा को एक सामाजिक उप-प्रणाली के रूप में परिभाषित करना और इसके विभिन्न प्रकार्यात्मक एवं संवादात्मक आयामों का अन्वेषण करना है। समाजशास्त्रीय विमर्श में शिक्षा केवल सूचनाओं के हस्तांतरण का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना को बनाए रखने और परिवर्तित करने वाली एक अनिवार्य व्यवस्था है। इस शोध में तीन प्रमुख सैद्धांतिक दृष्टिकोणों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है, जिसमें प्रथम एमिल दुर्खीम का दृष्टिकोण है जो शिक्षा को 'व्यवस्थित समाजीकरण' और 'नैतिक अनुशासन' के माध्यम से सामाजिक एकता (Solidarity) का आधार मानता है; द्वितीय टैल्कोट पार्सन्स का संरचनात्मक-प्रकार्यवाद है जो विद्यालय को परिवार और व्यापक समाज के बीच एक 'सेतु' के रूप में देखता है और 'योग्यतावाद' (Meritocracy) के माध्यम से सामाजिक भूमिकाओं के निष्पक्ष आवंटन पर बल देता है; तथा तृतीय कार्ल मार्क्स और उनके अनुयायियों का संघर्षवादी सिद्धांत है जो शिक्षा को शासक वर्ग की 'विचारधारा' के प्रसार और वर्ग-विभाजन को वैध बनाने वाले एक उपकरण के रूप में चित्रित करता है। शोध के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि शिक्षा व्यवस्था एक साथ दोहरी भूमिका निभाती है; जहाँ यह एक ओर सामाजिक स्थिरता और कौशल विकास (दुर्खीम व पार्सन्स) सुनिश्चित करती है, वहीं दूसरी ओर यह 'सांस्कृतिक पूंजी' के माध्यम से असमानता का पुनरुत्पादन (मार्क्स) भी करती है। अंततः, यह शोध पत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के संदर्भ में इन सिद्धांतों की प्रासंगिकता को रेखांकित करता है, जहाँ नैतिकता, योग्यता और समानता के बीच संतुलन साधने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द: सामाजिक व्यवस्था, समाजीकरण, योग्यतावाद, वर्ग पुनरुत्पादन, प्रकार्यवाद, संघर्ष सिद्धांत। दुर्खीम, मार्क्स, पार्सन्स

1. प्रस्तावना (INTRODUCTION)

शिक्षा मानव समाज की वह धुरी है जिस पर सामाजिक निरंतरता और परिवर्तन टिके होते हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने का साधन नहीं है, बल्कि यह एक जटिल 'सामाजिक व्यवस्था' (Social System) है। यह व्यक्ति को समाज के सांचे में ढालती है और सामाजिक संरचना को बनाए रखने में मदद करती है।

प्रस्तुत शोध पत्र में हम शिक्षा को एक ऐसी व्यवस्था के रूप में देखेंगे जो समाज के साथ परस्पर क्रिया करती है। जहाँ **एमिल दुर्खीम** इसे सामाजिक एकता और नैतिकता का आधार मानते हैं, वहीं **टैल्कोट पार्सन्स** इसे योग्यता के आधार पर भूमिकाओं के आवंटन का साधन मानते हैं। इसके विपरीत, **कार्ल मार्क्स** का संघर्षवादी दृष्टिकोण शिक्षा के उस पक्ष को उजागर करता है जो वर्ग-भेद को गहरा करता है और शासक वर्ग के हितों की रक्षा करता है। यह शोध इन तीनों विपरीत और पूरक विचारधाराओं के माध्यम से शिक्षा की सामाजिक भूमिका का गहराई से विश्लेषण करता है।

2. शोध के उद्देश्य (Objectives)

- शिक्षा को एक सामाजिक व्यवस्था के रूप में परिभाषित करना।
- दुर्खीम, मार्क्स और पार्सन्स के शैक्षिक सिद्धांतों का विस्तृत विश्लेषण करना।
- शिक्षा के माध्यम से सामाजिक नियंत्रण और सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को समझना।
- वर्तमान वैश्विक और भारतीय शैक्षिक परिवेश में इन सिद्धांतों की प्रासंगिकता की जांच करना।

3. शोध विधि (Research Methodology)

यह शोध **वर्णनात्मक (Descriptive)** और **विश्लेषणात्मक (Analytical)** पद्धति पर आधारित है। अध्ययन के लिए **द्वितीयक डेटा स्रोतों (Secondary Sources)** का उपयोग किया गया है, जिनमें प्रमुख समाजशास्त्रियों की मूल पुस्तकें, शोध पत्रिकाएं (Journals), और अकादमिक लेख शामिल हैं। इसमें **तुलनात्मक दृष्टिकोण** अपनाया गया है ताकि कार्यात्मक और संघर्षवादी विचारधाराओं के अंतर को स्पष्ट किया जा सके।

4. साहित्य सर्वेक्षण (LITERATURE REVIEW)

शिक्षा के समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि अकादमिक साहित्य में इस विषय को लेकर गहरे अंतर्विरोध और पूरक विचार मौजूद हैं। (1) एमिल दुर्खीम (1922) के प्रारंभिक शोधों ने 'व्यवस्थित समाजीकरण' की अवधारणा को जन्म दिया, जहाँ उन्होंने तर्क दिया कि शिक्षा का प्राथमिक कार्य बालक में उन नैतिक और सामाजिक अवस्थाओं को जगाना है जो सामूहिक जीवन की स्थिरता के लिए अनिवार्य हैं। दुर्खीम का यह कार्यात्मक दृष्टिकोण समाज को एक एकीकृत इकाई के रूप में देखता है। इसके विपरीत, (2) कार्ल मार्क्स और एंगेल्स के मौलिक विचारों से प्रेरित संघर्षवादी साहित्य शिक्षा को एक निष्पक्ष संस्था के बजाय 'शासक वर्ग के औजार' के रूप में देखता है। मार्क्सवादी दृष्टिकोण के अनुसार, शिक्षा पूंजीवादी 'अधिसंरचना' का वह हिस्सा है जो वर्ग-विभाजन को वैध बनाता है। इसी कड़ी में, (3) टैल्कोट पार्सन्स (1959) ने आधुनिक औद्योगिक समाजों में विद्यालय को एक 'सेतु' (Bridge) के रूप में स्थापित किया, जो बच्चे को परिवार के विशेष मानकों से निकालकर समाज के 'सार्वभौमिक और योग्यतावादी' (Meritocratic) मानकों की ओर ले जाता है। सत्तर के दशक में (4) सैमुअल बॉल्स एवं हरबर्ट गिंटिस (1976) ने अपने 'पत्राचार सिद्धांत' के माध्यम से यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि स्कूलों का अनुशासन और पदानुक्रम वास्तव में पूंजीवादी कार्यस्थल की प्रतिलिपि मात्र है। अंततः, (5) पियरे बॉर्डियू (1977) जैसे विचारकों ने 'सांस्कृतिक पूंजी' (Cultural Capital) के माध्यम से यह समझाया कि कैसे शिक्षा व्यवस्था उच्च वर्ग के मूल्यों को प्राथमिकता देकर सामाजिक असमानता का पुनरुत्पादन करती है। इस प्रकार, उपलब्ध साहित्य यह दर्शाता है कि शिक्षा व्यवस्था समाजीकरण, चयन और शक्ति-संरचना के बीच संतुलन साधने का एक जटिल माध्यम है।

शिक्षा का समाजशास्त्रीय अध्ययन इस बात पर केंद्रित है कि शैक्षणिक संस्थाएँ समाज की अन्य इकाइयों के साथ किस प्रकार अंतःक्रिया करती हैं। इस विमर्श में दुर्खीम, मार्क्स और पार्सन्स के विचार सबसे महत्वपूर्ण हैं।

5. समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

1. एमिल दुर्खीम: शिक्षा और सामाजिक सुदृढ़ता (Social Solidarity)

दुर्खीम ने शिक्षा को समाज के अस्तित्व के लिए अनिवार्य माना। उनके सिद्धांत के मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं:

- **1.1 व्यवस्थित समाजीकरण:** दुर्खीम के अनुसार, "शिक्षा वह क्रिया है जो वयस्क पीढ़ियों द्वारा उन लोगों पर की जाती है जो अभी सामाजिक जीवन के लिए तैयार नहीं हैं।" इसका कार्य व्यक्ति में उन शारीरिक और नैतिक अवस्थाओं को जगाना है जो समाज की निरंतरता के लिए आवश्यक हैं।

• **1.2 सामूहिक चेतना का निर्माण:** समाज की एकता 'सामूहिक चेतना' (Collective Conscience) पर टिकी होती है। शिक्षा बालकों को समाज के साझा मूल्यों, परंपराओं और इतिहास से परिचित कराती है, जिससे उनमें 'हम' की भावना पैदा होती है।

• **1.3 नैतिक अनुशासन:** दुर्खीम मानते थे कि विद्यालय समाज का एक सूक्ष्म रूप है। यहाँ बच्चा अनुशासन सीखता है, जो समाज के नियमों के पालन के लिए आवश्यक है। बिना नैतिक शिक्षा के समाज में अराजकता फैल सकती है।

2. कार्ल मार्क्स: शिक्षा, वर्ग संघर्ष और वैचारिक नियंत्रण

मार्क्सवादी दृष्टिकोण शिक्षा को एक ऐसी व्यवस्था के रूप में देखता है जो सत्ता और संपत्ति के असमान वितरण को बनाए रखती है।

• **2.1 वैचारिक राज्य उपकरण (Ideological State Apparatus):** मार्क्सवादी विचारक लुई अल्थुसर के अनुसार, शिक्षा व्यवस्था वह माध्यम है जिससे शासक वर्ग अपनी विचारधारा को समाज पर थोपता है। यह बच्चों को यह सिखाता है कि वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्था ही सर्वोत्तम है।

• **2.2 पत्राचार सिद्धांत (Correspondence Principle):** बॉल्स और गिंटिस के अनुसार, स्कूल का वातावरण कार्यस्थल (Factory/Office) के वातावरण की नकल करता है। स्कूल में छात्रों को दंड, ग्रेड और पदानुक्रम के माध्यम से वही आज्ञाकारिता सिखाई जाती है, जिसकी आवश्यकता पूंजीपतियों को अपने मज़दूरों से होती है।

• **2.3 वर्ग पुनरुत्पादन (Class Reproduction):** मार्क्सवादियों का तर्क है कि शिक्षा वर्ग-विभाजन को समाप्त नहीं करती, बल्कि उसे वैध बनाती है। अमीरों के बच्चों को नेतृत्व के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, जबकि गरीबों को केवल निर्देश पालन करना सिखाया जाता है।

• **2.4 मिथ्या चेतना (False Consciousness):** शिक्षा व्यवस्था यह भ्रम पैदा करती है कि सफलता केवल व्यक्ति की अपनी मेहनत का परिणाम है। यह इस तथ्य को छिपा देती है कि सामाजिक अवसर वर्ग, धन और शक्ति के आधार पर असमान रूप से बंटे हुए हैं।

3. टैल्कोट पार्सन्स: योग्यतावाद और भूमिका आवंटन

पार्सन्स ने संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण से शिक्षा को आधुनिक समाज की एक अनिवार्य आवश्यकता माना।

• **3.1 सामाजिक सेतु (Social Bridge):** पार्सन्स के अनुसार, विद्यालय परिवार और व्यापक समाज के बीच एक सेतु का कार्य करता है। परिवार में बच्चा 'विशिष्ट मानकों' (Particularistic Standards)

से बंधा होता है, जबकि स्कूल उसे 'सार्वभौमिक मानकों' (Universalistic Standards) की दुनिया में ले जाता है।

- **3.2 योग्यतावाद (Meritocracy):** पार्सन्स का मानना है कि आधुनिक समाज में व्यक्ति की प्रतिष्ठा उसके जन्म से नहीं, बल्कि उसकी 'उपलब्धि' (Achievement) से तय होती है। विद्यालय वह स्थान है जहाँ सभी को समान अवसर मिलते हैं और योग्यता के आधार पर उनका मूल्यांकन होता है।
- **3.3 भूमिका आवंटन (Role Allocation):** समाज के विभिन्न कार्यों के लिए अलग-अलग प्रतिभा की आवश्यकता होती है। शिक्षा व्यवस्था यह तय करती है कि कौन व्यक्ति किस भूमिका (जैसे प्रबंधक, डॉक्टर या तकनीशियन) के लिए सबसे अधिक उपयुक्त है।
- **3.4 मूल्यों का हस्तांतरण:** शिक्षा समाज के मुख्य मूल्यों—जैसे व्यक्तिवाद, उपलब्धि और प्रतिस्पर्धा—को भावी पीढ़ी में स्थानांतरित करती है, जो औद्योगिक व्यवस्था के संतुलन के लिए आवश्यक हैं।

6. तुलनात्मक विश्लेषण: समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों का समन्वय और अंतर्विरोध

शिक्षा की सामाजिक व्यवस्था को समझने के लिए एमिल दुर्खीम, कार्ल मार्क्स और टैल्कोट पार्सन्स के दृष्टिकोणों का तुलनात्मक अध्ययन अनिवार्य है। यद्यपि ये तीनों विचारक शिक्षा को समाज की एक महत्वपूर्ण उप-प्रणाली स्वीकार करते हैं, किंतु इसके प्रकार्यों (Functions) और परिणामों को लेकर इनके निष्कर्षों में गहरा बुनियादी अंतर है, जिसे निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

6.1. सामाजिक स्थिरता बनाम वर्ग संघर्ष: एमिल दुर्खीम और टैल्कोट पार्सन्स 'प्रकारवादी' (Functionalist) विचारधारा का प्रतिनिधित्व करते हैं। इनके लिए शिक्षा समाज में **'स्थिरता और संतुलन'** बनाए रखने का एक सकारात्मक साधन है। जहाँ **(1) दुर्खीम** का बल 'नैतिक समाजीकरण' पर है, वहीं वे शिक्षा को समाज की 'आत्मा' मानते हैं जो व्यक्ति को सामूहिक चेतना से जोड़कर एक सूत्र में पिरोती है। उनके अनुसार, शिक्षा के बिना समाज बिखर जाएगा। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए **(2) पार्सन्स** ने आधुनिक औद्योगिक समाज की जटिलताओं को केंद्र में रखा। उनके लिए शिक्षा एक ऐसी चयन प्रक्रिया है जो समाज के सुचारू संचालन के लिए 'योग्यतम' व्यक्ति का चुनाव करती है। इसके ठीक विपरीत, **(3) कार्ल मार्क्स** का 'संघर्षवादी' दृष्टिकोण शिक्षा की इस सकारात्मकता को पूरी तरह खारिज करता है। मार्क्स के लिए शिक्षा कोई निष्पक्ष संस्था नहीं, बल्कि शासक वर्ग के हाथों में **'शोषण और वैचारिक नियंत्रण'** का एक सूक्ष्म हथियार है। जहाँ दुर्खीम एकता देखते हैं, वहाँ मार्क्स वर्ग-विभाजन और वर्चस्व देखते हैं।

6.2. अवसर की समानता बनाम सांस्कृतिक पूंजी: पार्सन्स का **'योग्यतावाद' (Meritocracy)** यह तर्क देता है कि शिक्षा व्यवस्था सभी को समान अवसर प्रदान करती है और व्यक्ति की 'अर्जित परिस्थिति' (Achieved Status) ही उसकी सफलता का आधार बनती है। यह दृष्टिकोण समाज में एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को जन्म देता है। हालाँकि, मार्क्सवादी विश्लेषण इसे एक 'मिथ्या चेतना' (False Consciousness) करार देता है। मार्क्सवादियों के अनुसार, शिक्षा व्यवस्था वास्तव में उच्च वर्ग की **'सांस्कृतिक पूंजी'** को ही मान्यता देती है, जिससे अमीर का बच्चा हमेशा लाभ में रहता है और गरीब का बच्चा व्यवस्था से बाहर हो जाता है। इस प्रकार, पार्सन्स जिसे 'योग्यता आधारित चयन' कहते हैं, उसे मार्क्स 'अमीर-गरीब की खाई का पुनरुत्पादन' (Reproduction of Inequality) मानते हैं।

6.3. समाजीकरण का अंतिम उद्देश्य: इन तीनों विचारकों के अनुसार समाजीकरण का उद्देश्य भी भिन्न है। **(1) दुर्खीम** के लिए इसका अर्थ बालक को एक 'नैतिक सामाजिक प्राणी' बनाना है। **(2) पार्सन्स** के लिए इसका अर्थ बालक को 'सार्वभौमिक मानकों' के अनुरूप वैश्विक नागरिक बनाना है। जबकि **(3) मार्क्स** के लिए यह समाजीकरण वास्तव में पूंजीवादी व्यवस्था के लिए 'आज्ञाकारी मज़दूर' तैयार करने की एक सोची-समझी प्रक्रिया है।

संक्षेप में, इन तीनों दृष्टिकोणों का तुलनात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि शिक्षा एक दोधारी तलवार है। यह जहाँ समाज को नैतिक धरातल पर एकजुट करती है और योग्य कार्यबल तैयार करती है, वहीं इसमें सत्ता और वर्ग-स्वार्थ के सूक्ष्म तत्व भी विद्यमान रहते हैं। ३५०० शब्दों के इस शोध में यह तुलनात्मक विश्लेषण यह सिद्ध करता है कि एक न्यायपूर्ण शैक्षिक व्यवस्था के निर्माण के लिए दुर्खीम की नैतिकता, पार्सन्स की योग्यता और मार्क्स द्वारा इंगित की गई असमानताओं के निवारण तीनों का सामंजस्य आवश्यक है।

7. सामाजिक चयन और वर्ग-पुनरुत्पादन की द्वंद्वात्मक प्रक्रिया

शिक्षा की सामाजिक व्यवस्था के भीतर 'सामाजिक चयन' (Social Selection) और 'वर्ग-पुनरुत्पादन' (Class Reproduction) दो ऐसी प्रक्रियाएँ हैं, जो यह निर्धारित करती हैं कि समाज का भविष्य का ढांचा कैसा होगा। जहाँ चयन की प्रक्रिया योग्यता की बात करती है, वहीं पुनरुत्पादन की प्रक्रिया सामाजिक असमानता के बने रहने पर बल देती है।

7.1. सामाजिक चयन (Social Selection): टैल्कोट पार्सन्स जैसे प्रकार्यवादियों के अनुसार, शिक्षा व्यवस्था समाज के लिए एक 'छाननी' (Sieve) की तरह कार्य करती है। इसका मुख्य कार्य व्यक्ति की जन्मजात पहचान (जाति, धर्म, वंश) को दरकिनार कर उसकी योग्यता, कौशल और उपलब्धि के आधार पर उसे समाज में एक विशिष्ट स्थान आवंटित करना है। आधुनिक समाज की जटिल संरचना के

लिए यह आवश्यक है कि डॉक्टर, इंजीनियर और नीति-निर्धारक जैसे महत्वपूर्ण पदों पर सबसे कुशल व्यक्ति ही पहुँचें। शिक्षा इस 'चयन' को परीक्षाओं और ग्रेडिंग प्रणाली के माध्यम से वैध बनाती है, जिसे हम **'योग्यतावाद'** कहते हैं।

7.2. वर्ग-पुनरुत्पादन (Class Reproduction): इसके विपरीत, कार्ल मार्क्स और पियरे बॉर्डियू जैसे विचारकों का तर्क है कि शिक्षा वास्तव में सामाजिक वर्गों को बदलने के बजाय उन्हें स्थिर रखती है। बॉर्डियू के अनुसार, उच्च वर्ग के बच्चों के पास **'सांस्कृतिक पूंजी'** (भाषा, शिष्टाचार, सामान्य ज्ञान) होती है, जिसे विद्यालयी पाठ्यक्रम में सबसे अधिक महत्व दिया जाता है। इसके परिणामस्वरूप, वे बच्चे स्वाभाविक रूप से परीक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। शिक्षा व्यवस्था इस सामाजिक लाभ को 'व्यक्तिगत प्रतिभा' के रूप में पेश करती है, जिससे अमीरों का वर्चस्व अगली पीढ़ी में भी बना रहता है।

7.3 विश्लेषण: शिक्षा के माध्यम से होने वाला यह चयन अक्सर निष्पक्ष नहीं होता। मार्क्सवादी दृष्टिकोण यह स्पष्ट करता है कि शिक्षा व्यवस्था 'छिपे हुए पाठ्यक्रम' (Hidden Curriculum) के जरिए मज़दूर वर्ग के बच्चों को आज्ञाकारिता सिखाती है, जबकि उच्च वर्ग के बच्चों को नेतृत्व के लिए तैयार करती है। इस प्रकार, शिक्षा एक तरफ तो सामाजिक गतिशीलता (Social Mobility) का भ्रम पैदा करती है, लेकिन दूसरी तरफ वह मौजूदा वर्ग-संरचना को समाज में गहराई से स्थापित (Reproduction) करने का कार्य भी करती है। सामाजिक चयन और पुनरुत्पादन के बीच एक निरंतर संघर्ष चलता रहता है। जहाँ आधुनिक लोकतांत्रिक समाज शिक्षा को विकास और समानता का द्वार मानते हैं, वहीं समाजशास्त्रीय विश्लेषण यह चेतावनी देता है कि यदि शिक्षा व्यवस्था में वर्ग-आधारित पक्षपात को दूर नहीं किया गया, तो यह केवल शक्ति और संपत्ति के असमान वितरण को बनाए रखने का एक औपचारिक माध्यम बनकर रह जाएगी।

तुलनात्मक विश्लेषण: संक्षिप्त चार्ट

मानक अंक	तुलना का आधार	एमिल दुर्खीम	कार्ल मार्क्स	टैल्कोट पार्सन्स
1	**विचारधारा**	प्रकार्यवाद (एकता)	संघर्षवाद (नियंत्रण)	संरचनात्मक-प्रकार्यवाद
2	**मुख्य उद्देश्य**	नैतिक समाजीकरण	वर्ग-हितों की रक्षा	योग्यता आधारित चयन
3	**समाज का स्वरूप**	एकीकृत (Moral)	विभाजित (Conflict)	प्रतिस्पर्धी (Competitive)
4	**शिक्षा का कार्य**	सामाजिक एकता बनाना	'मिथ्या चेतना' जगाना	'सार्वभौमिक मूल्य' देना
5	**विद्यालय**	समाज का लघु रूप	शासक वर्ग का उपकरण	समाज के लिए 'सेतु'
6	**परिणाम**	सामाजिक सुदृढ़ता	असमानता का प्रसार	

8. निष्कर्ष (CONCLUSION)

प्रस्तुत शोध पत्र के विस्तृत विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा की सामाजिक व्यवस्था को किसी एक एकाकी दृष्टिकोण से नहीं समझा जा सकता। एमिल दुर्खीम, कार्ल मार्क्स और टैल्कोट पार्सन्स के सिद्धांत मिलकर शिक्षा के एक ऐसे त्रिकोणीय ढांचे का निर्माण करते हैं, जो सामाजिक एकता, आर्थिक गतिशीलता और वर्ग-संघर्ष की वास्तविकताओं को उजागर करता है।

1. सिद्धांतों का समन्वय: जहाँ **(1) एमिल दुर्खीम** ने यह सिद्ध किया कि शिक्षा समाज की 'नैतिक रीढ़' है जो 'संस्कारों' और साझा मूल्यों के माध्यम से सामाजिक स्थिरता सुनिश्चित करती है, वहीं **(2) टैल्कोट पार्सन्स** ने इसे आधुनिक औद्योगिक युग की आवश्यकता के रूप में देखा। पार्सन्स का 'सफलता' और 'योग्यता' का सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि शिक्षा व्यक्ति को उसकी क्षमता के आधार पर समाज में स्थान दिलाती है। हालाँकि, **(3) कार्ल मार्क्स** का संघर्षवादी दृष्टिकोण हमें इस सिक्के के दूसरे पहलू से परिचित कराता है। मार्क्स का यह तर्क अत्यंत महत्वपूर्ण है कि शिक्षा व्यवस्था अक्सर शासक वर्ग की 'विचारधारा' को थोपने का माध्यम बन जाती है, जो सामाजिक असमानता को कम करने के बजाय उसे 'वैधता' प्रदान करती है।

2. वर्तमान प्रासंगिकता (NEP 2020 के संदर्भ में): आज के वैश्विक और भारतीय परिवेश में, विशेषकर **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020)** के आलोक में, इन तीनों सिद्धांतों का महत्व और बढ़ गया है। नीति में निहित 'मूल्य आधारित शिक्षा' दुर्खीम के नैतिक समाजीकरण की याद दिलाती है, 'कौशल विकास और व्यावसायिक शिक्षा' पार्सन्स के योग्यतावाद पर आधारित है, और 'समावेशी शिक्षा व छात्रवृत्ति योजनाएँ' उन मार्क्सवादी चिंताओं का समाधान करने का प्रयास हैं जो वर्ग-भेद को मिटाने की वकालत करती हैं।

3. अंतिम विचार: अतः शिक्षा केवल सूचनाओं का संग्रह नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी 'जीवंत सामाजिक व्यवस्था' है जो समाज को संवारती भी है और कभी-कभी पुरानी रूढ़ियों को दोहराती भी है। ३५०० शब्दों के इस विस्तृत अध्ययन का अंतिम निष्कर्ष यही है कि एक न्यायपूर्ण और संतुलित समाज के लिए शिक्षा व्यवस्था में पार्सन्स की 'योग्यता' के साथ-साथ दुर्खीम की 'नैतिकता' का समावेश होना चाहिए, ताकि मार्क्स द्वारा इंगित की गई 'वैचारिक असमानता' को जड़ से समाप्त किया जा सके। शिक्षा को 'नियंत्रण के हथियार' के बजाय 'मुक्ति के द्वार' के रूप में विकसित करना ही आधुनिक समाज की सबसे बड़ी चुनौती और आवश्यकता है।

शिक्षा की सामाजिक व्यवस्था इन तीनों विचारकों के सिद्धांतों के बीच एक निरंतर संतुलन का परिणाम है। जहाँ **एमिल दुर्खीम** और **टैल्कोट पार्सन्स** शिक्षा को समाज की स्थिरता, नैतिक एकता और योग्यता आधारित चयन (Meritocracy) के लिए अनिवार्य मानते हैं, वहीं **कार्ल मार्क्स** का दृष्टिकोण हमें

सचेत करता है कि यही व्यवस्था वर्ग-विभाजन और वैचारिक नियंत्रण का माध्यम भी बन सकती है। आधुनिक समाज में शिक्षा केवल 'संस्कारों' (दुर्खीम) या 'सफलता' (पार्सन्स) का मार्ग नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी 'विचारधारा' (मार्क्स) भी है जो सामाजिक ढांचे को पुनः निर्मित करती है। अतः, एक प्रभावी शैक्षिक व्यवस्था वही है जो पार्सन्स की कुशलता और दुर्खीम की नैतिकता को अपनाते हुए मार्क्स द्वारा इंगित की गई असमानताओं को दूर करने का प्रयास करे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अल्थुसर, एल. (1971). *लेनिन एंड फिलॉसफी एंड अदर एसेज.* न्यू लेफ्ट बुक्स। (शिक्षा को 'वैचारिक राज्य उपकरण' के रूप में समझने हेतु)।
2. आइजैक, ए. एस. (2010). *शिक्षा का समाजशास्त्र.* पीएचआई लर्निंग। (भारतीय संदर्भ में शैक्षिक सिद्धांतों की व्याख्या)।
3. गिडेन्स, ए. (2009). *सोशियोलॉजी.* पॉलिटी प्रेस। (दुर्खीम और आधुनिक समाज के विश्लेषण हेतु)।
4. दुर्खीम, ई. (1922/1956). *एजुकेशन एंड सोशियोलॉजी.* द फ्री प्रेस। (व्यवस्थित समाजीकरण का मूल स्रोत)।
5. दुर्खीम, ई. (1925/1961). *मोरल एजुकेशन.* द फ्री प्रेस। (नैतिक अनुशासन के सिद्धांत हेतु)।
6. पार्सन्स, टी. (1951). *द सोशल सिस्टम.* रूटलेज। (सामाजिक व्यवस्था और संतुलन के अध्ययन हेतु)।
7. पार्सन्स, टी. (1959). "द स्कूल क्लास एज ए सोशल सिस्टम", *हार्वर्ड एजुकेशनल रिव्यू*। (योग्यतावाद और भूमिका आवंटन का मूल लेख)।
8. बॉर्डियू, पी. (1977). *रिप्रोडक्शन इन एजुकेशन, सोसाइटी एंड कल्चर.* सेज पब्लिकेशन्स। (सांस्कृतिक पूंजी और वर्ग पुनरुत्पादन हेतु)।
9. बॉल्स, एस., एवं गिंटिस, एच. (1976). *स्कूलिंग इन कैपिटलिस्ट अमेरिका.* बेसिक बुक्स। (पत्राचार सिद्धांत और मार्क्सवादी विश्लेषण हेतु)।
10. मार्क्स, के. (1867/1992). *दास कैपिटल.* पेंगुइन क्लासिक्स। (वर्ग संरचना और अधिसंरचना के आधार हेतु)।
11. राव, एम.एस.ए. (1974). *अर्बनाइजेशन एंड सोशल चेंज.* ओरिएंट लॉन्गमैन। (भारतीय शैक्षिक गतिशीलता के संदर्भ हेतु)।
12. शर्मा, के.एल. (2007). *सोशल स्ट्रेटिफिकेशन एंड मोबिलिटी.* रावत पब्लिकेशन्स। (स्तरीकरण और शिक्षा के संबंधों हेतु)।

13. श्रीनिवास, एम.एन. (1962). *कास्ट इन मॉडर्न इंडिया एंड अदर एसेज.* एशिया पब्लिशिंग हाउस। (भारतीय शिक्षा में जाति और वर्ग के प्रभाव हेतु)।
14. हर्लाम्बोस, एम., एवं होल्बोर्न, एम. (2013). *सोशियोलॉजी: थीम्स एंड पर्सपेक्टिव्स.* हार्पर कॉलिन्स। (तीनों विचारकों के तुलनात्मक विश्लेषण हेतु)।
15. हल्सी, ए.एच. (1997). *एजुकेशन: कल्चर, इकोनॉमी एंड सोसाइटी.* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। (शिक्षा के आर्थिक और सामाजिक परिणामों हेतु)।